محمد ﷺ خاتم النبيين - الهندية

मुहम्मद अंतिम नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

231

هاتف:٤٢٢٤٤٦٦ ٠١٦. فاكس:٤٢٢٤٤٧٧ ٠١٦

جمعية الدعوة بالزلفي

محمد ﷺ خاتم النبيين - هندي

मुहम्मद ﷺ अंतिम नबी

محمد ﷺ خاتم النبيين
أعده وترجمه إلى اللغة الهندية
جمعية الدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي
الطبعة الثانية : ٨ / ١٤٤٢ هـ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي ١٤٣٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

محمد ﷺ خاتم النبيين - الهندية / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي ط ١ .- الزلفي، ١٤٣٩ هـ

٦٨ ص ؛ ١٢×١٧ .سم

ردمك: ٥-٠١- ٨٢٤٣ -٦٠٣-٩٧٨

١- محمد صلي الله عليه وسلم ٢- السيرة النبوية أ- العنوان

ديوى ٢٣٩ ١٤٣٩/٥٥٤٦

رقم الإيداع: ١٤٣٩/٥٥٤٦

ردمك: ٥ - ٠١ - ٨٢٤٣- ٦٠٣- ٩٧٨

मुहम्मद ﷺ अंतिम नबी

नुबुवत से पहले अरब के हालात

उस समय अरबों के यहां बुत परस्ती का चलन था। दीने फ़ितरत के खिलाफ़ बुत परस्ती के अपनाने की वजह से उस ज़माने को ज़मानए जाहिलियत का नाम दिया गया। वह लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन बुतों की पूजा किया करते थे। उनमें मशहूर लात, उज़्ज़ा, मनात और हुबल हैं अलबत्ता अरबों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो यहूदियत, नसरानियत या मजूसियत को अपना धर्म मानते थे और बहुत थोड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी थी जो इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत अर्थात दीने हनीफ़ के मानने वाले थे

जहां तक आर्थिक जीवन की बात है तो गांव के लोगों का आर्थिक जीवन मुकम्मल तौर पर जानवरों से हासिल होने वाली दौलत पर निर्भर था जिन्हें लोग चराया करते थे और शहर में बसने वाले लोगों का जीवन खेती बाड़ी और तिजारत पर निर्भर था। इस्लाम के आगमन के कुछ दिनों पहले तक मक्का अरब का सबसे बड़ा तिजारती शहर था और कुछ स्थान ऐसे भी थे जैसे मदीना और ताइफ़ जहां निर्माण से संबंधित तहज़ीब भी मौजूद थी अलबत्ता सामाजिक जीवन का बुरा हाल था। जुल्म व अत्याचार, क़त्ल व मारकाट हर ओर फैला हुआ था। इनमें कमज़ोरों को हक़ से महरूम रखा जाता था, बच्चियों को ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था, असमतें रौंदी जाती थीं। ताक़तवर लोग कमज़ोरों का हक़ खा जाया करते थे। वे लोग

जितनी चाहे शादियां किया करते थे। बदकारी फैली हुई थी और मामूली मामूली बातों पर क़बीलों और कभी–कभी एक ही क़बीले के लोगों के बीच जंगें छिड़ जाया करती थीं।

इस्लाम के आने से पहले अरब की हालत का यह एक सरसरी जायज़ा है।

इब्ने ज़बीहैन (दो ज़बीहों का बेटा) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुजुर्ग अब्दुल मुत्तलिब की अधिक औलाद और मालदारी पर कुरैश गर्व किया करते थे। अब्दुल मुत्तलिब ने नज़्र मानी कि यदि अल्लाह उन्हें दस लड़के प्रदान करेगा तो माबूदों की समीपता हासिल करने के लिए उनमें से एक लड़के को ज़बह कर देंगे। उन्होंने जो सोचा था वही हुआ। उनके दस लड़के पैदा हुए जिनमें एक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप अब्दुल्लाह भी थे। अब्दुल मुत्तलिब ने जब नज़्र पूरी करनी चाही तो उन्होंने अपने बेटों के बीच क़ुर्आ अन्दाज़ी (पर्चियां डाल कर नाम निकालना) की तो उसमें अब्दुल्लाह का नाम आया। उन्होंने अब्दुल्लाह को ज़बह करना चाहा तो लोगों ने इस काम से मना कर दिया ताकि बाद में यह चीज़ सुन्नत न बन जाए।

इसके बाद अब्दुल्लाह और दस ऊंटों के बीच पर्चियां डाली गयीं तो उसमें भी अब्दुल्लाह ही का नाम निकला। फिर ऊंटों की तादाद बढ़ा दी तो उसमें भी उनका ही नाम निकला। इस प्रकार हर बार ऊंटों की तादाद बढ़ाने लगे। हर बार उसमें अब्दुल्लाह ही का नाम आता था। इस तरह करते करते ऊंटों की तादात सौ हो गयी तो इस बार ऊंट

का नाम निकला तो अब्दुल मुत्तलिब ने सौ ऊंटों को ज़बह कर दिया और अपने बेटे अब्दुल्लाह की ओर से इन ऊंटों का फ़िदया दिया।

अब्दुल्लाह अब्दुल मुत्तलिब के सबसे चहेते बेटे थे। खास तौर से फ़िदया देने के बाद। जब अब्दुल्लाह बड़े हुए तो उनके बाप ने बनू ज़ोहरा की एक लड़की आमिना बिन्त वहब को चुना और आपकी उनसे शादी करा दी। आमिना का हमल ठहरा उनके तीन महीने के बाद अब्दुल्लाह तिजारती क़ाफिले के साथ मुल्क शाम चले गए। वापसी में बीमारी का शिकार हो गए तो उन्होंने मदीना में बनू नज्जार से तअल्लुक़ रखने वाले अपने मामूज़ाद भाई के यहां क़याम किया। इसी दौरान वहीं पर उनकी मौत हो गयी और वे दफ़न कर दिए गए।

हमल के महीने पूरे हो गए और आप पीर के दिन पैदा हुए, अलबत्ता आपकी पैदाइश के दिन और महीने की सही बात मालूम नहीं है। एक कथन है कि आप 9 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। दूसरा कथन है कि 12 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। तीसरा कथन यह है कि रमज़ान के महीने में पैदा हुए और इसके अलावा भी बहुत से कथन हैं। आपकी पैदाइश 571 ईसवीं में हुई, इस साल को आमुल फ़ील के नाम से भी याद किया जाता है।

क़िस्सए फ़ील (हाथियों का क़िस्सा)

अबरहा हबशी जो यमन में शाह हबशा नजाशी का नायब था, देखा कि अरब मक्का में मौजूद खाना काबा का हज करते हैं और उसका सम्मान करते हैं और दूर दूर के

इलाक़ों से आकर वहां फ़िदिया पेश करते हैं तो उसने सनआ में एक बहुत बड़ा चर्च बनवाया, ताकि वह अरब के हाजियों का रुख़ उसकी तरफ़ मोड़ सके। इस बात का पता क़बाइल अरब में से एक क़बीला बनू कनाना के किसी आदमी को लगा तो वह रात में वहां गया और उसकी दीवारों को गन्दगियों से खराब कर दिया। अबरहा को जब इस बात का पता चला तो वह भड़क गया और बहुत अधिक नाराज़ हुआ। उसने एक बड़ा लशकर तैयार किया जिसमें 60 हजार सैनिक थे उनके साथ 9 हाथी थे, अबरहा इस लशकर को लेकर खाना काबा को ध्वस्त करने के इरादे से मक्का की ओर चल पड़ा। अपने लिए उसने एक बड़ा हाथी चुना। उसने अपने लशकर को मक्का में दाखिल होने के लिए तैयार किया लेकिन हाथी बैठ गया और आगे नहीं बढ़ा। वे लोग उसका रुख दूसरी ओर करते तो उठ कर चलने लगता और काबा की तरफ़ करते तो बैठ जाता।

इसी हाल में थे कि अल्लाह ने उन पर अबाबील चिड़ियों को भेजा, जो उन पर छोटे–छोटे पत्थर बरसा रही थीं जिनको जहन्नम की आग में तपाया गया था। हर चिड़िया तीन पत्थर लिए हुए थी। एक पत्थर अपनी चोंच में, और चने की तरह दो पत्थरों को अपने पांव में, ये पत्थर जिसको लगते, उसके जिसमानी अंग कटकर गिरने लगते और उसके बाद वह मर जाता था। अतएव वे लोग रास्ते में गिरते पड़ते भाग खड़े हुए। अबरहा को अल्लाह ने एक बीमारी का शिकार बना दिया जिससे उसकी उंगलियां गिर गयीं और वह सनआ तक नहीं पहुंच सका की वह हलाक

हो गया। उस समय कुरैश इस लशकर से डर कर अलग अलग घाटियों में बिखर गये थे और पहाड़ों में जा छुपे थे। जब वह लशकर अज़ाब का शिकार हो गया तो वे सही और ठीक ठाक अपने घरों में वापस लौट आए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से पचास दिन पहले यह घटना घटित हुई थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाअत

जब आपकी पैदाइश हुई तो आपके चचा अबू लहब की बान्दी ने आपको दूध पिलाया। इससे पहले उन्होंने आपके चचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रजियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था। इस तरह से वे रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई हुए। चूंकि अरबों का दस्तूर था कि वे अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए देहाती औरतों को तलाश किया करते थे ताकि उनकी अच्छे ढंग से जिसमानी परवरिश हो सके। इस तरह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरी दूध पिलाने वाली औरत के पास पहुंच गए। जिस समय आपकी पैदाइश हुई मक्का में बनु साअद की औरतों का एक गिरोह आया ताकि दूध पिलाने के लिए बच्चों को तलाश करे। औरतें घरों में घूमने लगीं। सभी औरतें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यतीमी और आपकी फ़क़ीरी की वजह से आप से मुंह मोड़ रही थी। जिन औरतों ने आप से मुंह मोड़ा था उनमें हलीमा साअदिया भी थी लेकिन अधिकांष घरों का चक्कर काटने के बावजूद उन्हें खुशहाल खानदान का कोई बच्चा नहीं मिल सका, जिसे अपने साथ ले जा सकें ताकि

उसकी मज़दूरी से तंगदस्ती और फ़क़ीरी को कम कर सकें। जबकि इस साल अकाल भी पड़ा हुआ था।

अतएव वे वापस आमिना के घर पहुंची और यतीम बच्चे और कम मज़दूरी को ही क़ुबूल कर लिया। हलीमा अपने पति के साथ एक दुबली पतली सुस्त रफ़्तार गधी पर बैठ कर मक्का आयी थीं। वापसी के मौक़े पर जैसे ही रसूल अकरम को अपनी गोद में रखती हैं गधी तेज़ रफ़्तारी के साथ दौड़ने लगती है और तमाम जानवरों को पीछे छोड़ देती है जिसे देखकर रास्ते के साथी और मिलने जुलने वाले हैरत में पड़ जाते हैं। इसी तरह दाई हलीमा बयान करती हैं कि उनकी छाती से बहुत ही कम दूध निकलता था जिसके कारण उनका बच्चा हमेशा भूख की तकलीफ़ से रोया करता था।

लेकिन जैसे ही उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना दूध पिलाना शुरु किया, दूध का फ़व्वारा बह पड़ा। इसी तरह से हलीमा बनू साअद की ज़मीनों के बंजर व खुश्क होने का जिक्र करती हैं और कहती हैं कि जैसे ही उन्हें उस बच्चे को दूध पिलाने का गौरव हासिल हुआ, बनू साअद की ज़मीनें हरी भरी हो गयीं और जानवर बच्चा देने लगे। पहले की हालत यकायक बदल गयी और फ़क़ीरी व मोहताजी की जगह खुशहाली व आसाइश ने ले ली।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो साल तक हलीमा साअदिया के पास रहे वे आप को अपने यहां और रखने की इच्छुक थी क्योंकि वे बहुत सी विचित्र चीज़ें और

हालतें इस बच्चे की वजह से पेश आते हुए देख रही थीं। दो साल पूरे होने पर हलीमा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आपकी मां और दादा की सेवा में हाज़िर हुईं। इससे पहले हलीमा ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत को देखा था जिसने उनके हालात बदल दिए थे। इसी वजह से उन्होंने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरी बार अपने साथ ले जाने के लिए आमिना से आग्रह किया। अतएव आमिना ने उन्हें इसकी इजाज़त दे दी। हलीमा यतीम बच्चे को अपने साथ लिए क़बीला बनू साअद पहुंचीं। वे बड़ी खुश थीं और अपने सौभाग्य पर खुशी महसूस कर रही थीं।

शक़्क़े सदर की घटना

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी चार साल के हुए थे। आप एक दिन अपने रज़ाई भाई (हलीमा के बेटे) के साथ खेमों पर खेल रहे थे कि हलीमा का बेटा दौड़ता हुआ आया। उसके चेहरे पर भय की अलामतें नज़र आ रही थीं, उसने अपनी मां से अपने कुरैशी भाई को तलाश करने को कहा। हलीमा ने पूरी घटना के बारे में सवाल किया तो उसने बताया : ''मैंने दो लोगों को सफेद कपड़ों में देखा, उन्होंने हमारे कुरैशी भाई को हम लोगों के बीच से पकड़ा और लिटाकर उसका सीना चाक किया, इस से पहले कि वे अपनी बात पूरी कर पाते, हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ दौड़ीं। उन्होंने देखा कि आप खड़े थे और हरकत नहीं कर रहे थे। आपका

चेहरा ज़र्द हो रहा था और रंग उड़ा हुआ था। हलीमा ने आप के साथ पेश आई घटना के बारे में पूछा तो आपने बताया कि सब कुछ ठीक है और बताया कि आपके पास सफ़ेद कपड़े पहने हुए दो लोग आए और उन्होंने पकड़ कर आप का सीना चाक कर दिया। आपके दिल को निकाला और उसके सियाह धब्बे को निकाल कर फेंक दिया और दिल को ठंडे पानी से धोया और फिर उसे पेट में रख दिया। इसके बाद आपके सीने पर हाथ फेरा, फिर वे लोग चले गए और ग़ायब हो गए

हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खेमे में लायीं और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आपकी मां की सेवा में जा पहुंचीं उन्हें उस समय देखकर आमिना को बड़ी हैरत हुई क्योंकि हलीमा बच्चे को अपने पास रखने की इच्छुक थीं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मां ने इस की वजह मालूम की तो उन्होंने शक़्क़े सदर की पूरी घटना बयान कर दी।

आमिना अपने यतीम बच्चे को लेकर क़बीला बनू नज्जार के अपने भाइयों से मुलाक़ात के लिए मदीना चली गयीं और वहीं कई दिन तक ठहरीं। वापसी की राह में अबवा नामक स्थान पर उनका इन्तिक़ाल हो गया और वहीं दफ़न कर दी गयीं।

6 साल की उम्र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारी आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने संभाली और आपको बड़े प्यार व मुहब्बत से रखा। लेकिन जब आप

आठ साल के हुए तो आपके दादा भी वफ़ात कर गए तो उनके बाद चचा अबू तालिब ने अधिक संतान होने और माल व दौलत की कमी के बावजूद आपकी किफ़ालत की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने और उनकी पत्नी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपने बेटे जैसा सुलूक किया। यही वजह है कि यह यतीम अपने चचा जान से बड़ी हद तक घुल मिल गया था। इसी माहौल में आप की पहली तर्बियत शुरु हुई और सच्चाई और अमानतदारी पर आपका लालन पालन हुआ यहां तक कि ये दोनों खूबियां आपका लक़ब हो गयीं। जब कहा जाता कि ''अमीन आ गए या ''सादिक आ गए तो इससे लोग समझ जाते कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ बड़े हुए तो अपने जीवन के मामले और खाने कमाने के तअल्लुक़ से स्वयं अपने आप पर भरोसा करने लगे और थोड़े माल के बदले कुरैशियों की बकरियां चराने का काम भी किया।

मुल्क शाम का सफ़र करने वाले एक तिजारती क़ाफिले में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्कत की थी। इसमें खदीजा रजियल्लाहु अन्हाका बहुत ज़्यादा माल लगा हुआ था। खदीजा बहुत ही मालदार विधवा औरत थीं। इस तिजारती क़ाफिले में खदीजा के माल के वकील और दूसरे कामों का ज़िम्मेदार उनका सेवक मैसरा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत और इमानदारी की वजह से तिजारत में बहुत अधिक लाभ हुआ। इस तरह का लाभ इससे पहले कभी नहीं हुआ था। खदीजा ने अपने सेवक मैसरा से इतने ज्यादा लाभ के बारे

में पूछा तो उसने बताया कि सामान दिखाने और बेचने की ज़िम्मेदारी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने अपने सर ली, जिसे देखकर बड़ी तादाद में लोग उनके पास आए तो इस तरह से जुल्म के बिना बहुत अधिक लाभ हासिल हुआ।

खदीजा ने अपने सेवक मैसरा की बातों को ध्यान से सुना। वे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे मे पहले से कुछ जानती भी थीं लेकिन यह घटना सुन कर उनकी पसन्दीदगी में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी करने की इच्छा उनके दिल में पैदा हुई। उन्होंने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेजा ताकि इस बारे में आपकी राय से उन्हें आगाह करें। उस समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 25 साल थी। अतः वह औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुई और उसने खदीजा की तरफ़ से शादी का पैग़ाम रखा, जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार कर लिया। इस तरह यह शादी हो गयी और इनमें से हरेक दूसरे को पाकर खुश हुए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खदीजा की दौलत की देखभाल की ज़िम्मदारी संभाल ली। आपने इस मैदान में अपनी सूझ बूझ और योग्यता साबित कर दी। इस तरह कई साल गुज़र गए। रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खदीजा के कई औलाद हुई। लड़कियों में ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाथीं और लड़कों में क़ासिम और अब्दुल्लाह थे जो कम उम्र ही में वफ़ात पा गए।

नुबुवत

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसे ही चालीस साल की उम्र के क़रीब हुए, आप मक्का के मश्रिक़ में मौजूद पहाड़ की हिरा नामक गुफ़ा के अन्दर एकान्त में अकेले रहने लगे। आप कई दिन और कई रातें उसी गुफ़ा में गुज़ारते और अल्लाह की इबादत करते। इक्कीसवीं रमज़ान को आप गुफ़ा ही में थे जबकि आपकी उम्र चालीस साल थी आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और आप से कहा ''पढ़िए आपने कहाः ''मैं पढ़ना नहीं जानता। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने यही बात दूसरी और तीसरी बार कही। तीसरी बार उन्होंने कहाः पढ़िए...

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ(٢) خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ(٣) اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ(٤) الَّذِي عَلَّمَ بِالقَلَمِ(٥) عَلَّمَ الإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ(٦) ﴾. [العلق].

इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी खलक़, खलक़ल इन्सान मिन अलक़, इक़रा वरब्बुकल अकरमुल्लज़ी अल्लम बिल क़लम, अल्लमल इन्सान मालम यालम

वहां से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर वापस आए। इस घटना के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिरा गुफ़ा में ठहरने की हिम्मत नहीं कर पाए। अतः घर लौट आए। अपनी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके पास गए। उस समय आपका दिल कांप रहा था। आपने कहा : ''मुझे चादर उढ़ादो, मुझे चादर उढ़ा दो खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने आप पर चादर

डाल दी। कुछ देर बाद आप की घबराहट कम हुई दिल से डर जाता रहा। आपने खदीजा रजियल्लाहु अन्हासे पूरी घटना बयान की और कहा ''मुझे अपनी जान के तअल्लुक़ से ख़तरा व अन्देशा होने लगा था खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने कहाः ''कदापि नहीं, अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं कर सकता, आप रिष्ते नाते को जोड़ते हैं, लाचारों की मदद करते हैं, ग़रीबों को नवाज़ते हैं, मेहमानों की मेहनवाज़ी करते हैं और मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं।

कुछ मुद्दत के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर हिरा गुफ़ा पर पहुंचे ताकि आप अपनी इबादत को जारी रख सकें। जब इबादत कर चुके तो मक्का वापस होने के इरादे से गुफ़ा से निकले। जब बीच वादी में पहुंचे तो आपको जिबरईल अलैहिस्सलाम दिखाई दिए। वे आसमान व ज़मीन के बीच कुर्सी पर बैठे हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने आप तक यह वहय पहुंचायीः

يَاأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ * قُمْ فَأَنْذِرْ * وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ * وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ * وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ (المدّثر 1.5)

या अय्युहल मुद्दस्सिर. क़ुम फ़अन्ज़िर वरब्बक फ़कब्बिर. व सियाबक फ़तहहिर. वर्रुज ज़ फ़हजुर (सूरह अल मुद्दस्सिर, आयत 1–5)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपनी दावत आरंभ की तो ईमान की दावत को सबसे पहले आपकी योग्य और अक़लमन्द पत्नी खदीजा ने स्वीकार किया। उन्होंने अल्लाह के एक होने का इक़रार किया और अपने

पति की नुबुवत की गवाही दी। उन्होंने सबसे पहले इस्लाम स्वीकार किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जिगरी दोस्त अबू बक्र से इस दावत को बयान किया तो वे भी ईमान ले आए और खुलकर तसदीक़ की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा जान, जिन्होंने आपकी मां और दादा की वफ़ात के बाद आपकी किफ़ालत और लालन पालन की ज़िम्मेदारी संभाली थी, उनके एहसानों की भरपाई करने के मक़सद से उनके बच्चों में से अली रजियल्लाहु अन्हु को पालने के मक़सद से अपने पास ही रखा था, अतएव अली रजियल्लाहु अन्हु ने ईमान के माहौल में आँखें खोलीं और इस दावत को स्वीकार किया। उसके बाद खदीजा के सेवक ज़ैद बिन हारिसा ने इस्लाम स्वीकार किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लगातार खुफ़िया तौर पर दावत देते रहे और लोग इस्लाम को पोशीदा रखते रहे। क्योंकि जिसके इस्लाम स्वीकार करने की बात कुरैश को मालूम हो जाती, उसे वे लोग इस्लाम से अलग करने के लिए सख़्त क़िस्म की यातनाएं दिया करते थे

एलानिया दावत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन सालों तक खुफ़िया अन्दाज़ में व्यक्तिगत तौर पर लोगों को दावत देते रहे। इसके बाद अल्लाह ने कुरआन मजीद की यह आयत उतारी

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ﴾ [الحجر:٩٤]

जिस बात का आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे खोलकर सुना दिजीए और मुशिरकीन से मुह फेर लिजीए (सूरह अल हिज्र आयत 94)

तो एक दिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ा की पहाड़ी पर मक्का वालों को आवाज़ लगाने के लिए खड़े हुए आपकी बात सुनकर बहुत सारे लोग जमा हो गए जिनमें आपका चचा अबू लहब भी था जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुश्मनी में आगे आगे था। जब आपके पास लोग जमा हो गए तो आपने फ़रमायाः

देखो यदि मैं तुम्हें बताऊं कि इस पहाड़ के पीछे दुशमन घात लगाकर बैठा हुआ है तो क्या तुम मेरी बात की तसदीक़ करोगे?

तमाम लोगों ने कहाः ''हमने आपको हमेशा सच्चा और अमानतदार पाया है। आपने कहाः ''मैं तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से डरा रहा हूं। इसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम की दावत, अल्लाह की इबादत और बुतों की पूजा को छोड़ने की दावत देने लगे। लोगों के बीच से अबू लहब बाहर निकला और कहाः ''तुम बर्बाद हो क्या तुमने हमें इसी वजह से जमा किया है? इस अवसर पर अल्लाह ने एक सूरह उतारी जो क़ियामत तक पढ़ी जाती रहेगी

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ(٢) مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ(٣) سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ(٤) وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الحَطَبِ(٥) فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ (المسد)

तब्बत यदा अबी लह बिवं व तब्ब . मा अग़ना अन्हु मा लुहु वमा कसब सयसला नारन ज़ात लह बिवं वमरअतुहू हम्मा लतल हतब . फीजीदिहा हब्लुम्मिम्मसद (सूरह मसद)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को जारी रखा और आपने लोगों के जमा होने की जगहों पर खुलकर दावत देना शुरु कर दिया। आप काबा के क़रीब नमाज़ पढ़ा करते थे। लोगों की मज्लिसों में आते, मुश्रिकों के बाज़ारों में तशरीफ ले जाते, ताकि उन्हें इस्लाम की दावत दे सकें। आप को काफ़िरों की यातनाओं का बहुत ज़्यादा सामना करना पड़ा, इसी तरह से आप पर जो लोग ईमान लाए थे, काफ़िरों की यातनाएं उन पर बढ़ गयीं। इन्हीं में यासिर, सुमय्या और उनके बेटे अम्मार की यातनाएं भी हैं कि यासिर व सुमय्या यातनाओं की कठोरता की वजह से शहीद हो गए। सुमय्या इस्लाम में सबसे पहली शहीद महिला हैं। इसी तरह बिलाल रजियल्लाहु अन्हु को उमय्या बिन खल्फ़ और अबू जहल के हाथों सख्त तकलीफ़ों से दो चार होना पड़ा। बिलाल रजियल्लाहु अन्हु अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु की कोशिशों से इस्लाम में दाखिल हुए थे जिसका उमय्या बिन खल्फ़ को पता लगा तो उसने यातनाओं और तकलीफों की सारी हदें तोड़ दीं ताकि वे इस्लाम को छोड़ दें लेकिन उन्होंने इस बात से इन्कार कर दिया और अपने दीन पर क़ायम रहे

अतएव उमय्या बेड़ियों में जकड़ कर आपको मक्का के बाहर ले जाता और आपको गर्म रेत पर लिटा कर आपके सीने पर बड़ा भारी पत्थर रख दिया करता था। इसके बाद स्वयं वह और उसके दूसरे आदमी को कोड़ों से मारा करते थे। इस दौरान बिलाल ''अहद अहद अर्थात अल्लाह एक है, अल्लाह एक है कहा करते थे। एक दिन बिलाल रजियल्लाहु अन्हु इसी हाल में थे कि उनके पास से अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ तो उन्होंने बिलाल रजियल्लाहु अन्हु को उमय्या से खरीद लिया और उन्हें अल्लाह की राह में आज़ाद कर दिया

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्हीं मुसीबतों और परेशानियों की वजह से मुसलमानों को इस्लाम खुल कर ज़ाहिर करने से मना किया करते थे और इसी तरह उन्हें खुफिया तौर पर जमा किया करते थे, क्योंकि यदि आप उनको एलानिया तौर पर जमा करते तो शिर्क में मस्त लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी शिक्षा व रहनुमाई के बीच आड़े आ जाते और इससे दोनों गिरोहों के दरमियान जंग छिड़ जाती जो कि मुसलमानों की कम तादाद व बेसरो सामानी की वजह से मुसलमानों के विनाश और बर्बादी का कारण बन जाती अतएव हिकमत का तक़ाज़ा यही था कि दावत को खुफ़िया रखा जाए। जहां तक रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात है तो आप कुरैश के काफ़िरों की यातनाओं और अत्याचारों के बावजूद एलानिया तौर पर दावत और इबादत को मुश्रिकों के सामने अंजाम दिया करते थे।

हबशा की ओर हिजरत

जिन लोगों के इस्लाम का मामला स्पष्ट हो जाता। जो कमज़ोर होते, मुश्रिकीन उन्हें बराबर कष्ट व यातनाएं देते रहते थे। यह देख कर सहाबा किराम ने अपने दीन के साथ हबशा के शाह नजाशी के पास हिजरत कर जाने की इजाजत चाही, इस उम्मीद पर कि उसके पास सुख शान्ति का जीवन गुजार सकेंगे, खास तौर पर तब जबकि बहुत से मुसलमानों को कुरैश से अपनी जान व माल का खतरा पैदा हुआ तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको हिजरत की इजाज़त दे दी। यह नबी बनाए जाने के पांच साल बाद की बात है।

इस अवसर पर लगभग सत्तर मुसलमानों ने अपने घर वालों के साथ हिजरत की जिनमें उसमान रजियल्लाहु अन्हु , उनकी पत्नी रुक़य्या बिन्त मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी थीं। कुरैशियों ने वहां भी अर्थात हबशा में भी उनके रहने सहने को खतरे में डालने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने बादशाह की सेवा में तोहफ़े भेजे और उससे मांग की कि इन भगौड़ों को उनके हवाले कर दे और उससे कहा कि मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां को गालियां देते हैं। जब बादशाह ने मुसलमानों से इस बाबत मालूम किया तो उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम के बारे मे कुरआन जो कहता है उन सारी चीज़ों को पेश कर दिया और हक़ को पूरे तौर पर बयान कर दिया और उसके सामने सूरह मरयम की तिलावत की। अतएव शाह नजाशी ने मुसलमानों को अमान प्रदान की और उन्हें

मुश्रिकों के हवाले करने से इन्कार कर दिया और वह स्वयं ईमान की दौलात से मालामाल हुआ और अपने इस्लाम लाने का एलान कर दिया।

इसी साल रमज़ान के महीने में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरम में लोगों के बीच तशरीफ़ ले गए और उनके बीच खड़े होकर सूरह नजम की तिलावत करने लगे। वहां कुरैश के लोगों की एक बड़ी जमाअत मौजूद थी। उन काफ़िरों ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुरआन न सुनने की अपनी लगातार वसीयत व नसीहत की वजह से इससे पहले कुरआन करीम की तिलावत कभी नहीं सुनी थी, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरह की उनके सामने तिलावत की और अल्लाह का कलाम उनके कानों से टकराया तो उनमें से हर व्यक्ति इसे ध्यान से सुनने लगा, उस समय उनके दिल में इसके सिवा कोई दूसरा विचार नहीं था। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयते करीमा فَاسْجُدُوا لله وَاعْبُدُوا [النَّجم:٦٢] (सूरह अन नजम आयत 62) की तिलावत की तो आपने सज्दा किया और फिर ग़ैर इख़्तियारी तौर पर सारे लोग सज्दे में गिर पड़े।

कुरैश के लोग बराबर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत का विरोध करते रहे और इस सिलसिले में उन्होंने विभिन्न साधनों का इस्तेमाल भी किया। उन्होंने मुसलमानों को यातनाएं दीं, तरह तरह से परेशान किया धमकियां दीं और तरह–तरह का लालच भी

दिया। लेकिन इसके बावजूद मुसलमानों ने दीन के दामन को और अधिक मज़बूती से थामा और इस्लाम लाने वालों की तादाद बढ़ती ही गयी। उन्होंने इस्लाम के विरोध का एक नया तरीक़ा अपनाया और वह यह है कि एक सहीफ़ा लिखा और सारे लोगों ने उस पर दस्तख़त किए और उसे काबे के अन्दर लटका दिया। उन लोगों ने इसमें मुसलमानों और बनू हाशिम से पूरे तौर पर सामाजिक बायकाट करने की सन्धि की। अतएव उनके साथ खरीद व फरोख्त, शादी विवाह, सहयोग और किसी भी तरह का मामला नहीं किया जा सकता था।

इसकी वजह से मुसलमान मक्का से निकल कर एक घाटी ''शेअबे अबू तालिब में जाने पर मजबूर हो गए। वहां मुसलमानों को सख्त मुसीबतों से दो चार होना पड़ा और वे भूख व तंग दस्ती से दो चार हुए। मालदार लोगों ने अपना सारा माल खर्च कर दिया। खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने भी अपना पूरा माल खर्च कर दिया और उनके बीच बीमारियां फैल गयीं और उनमें से बहुत से लोग मौत के किनारे पर पहुंच गए, लेकिन वे लोग जमे रहे और सब्र करते रहे और उनमें से एक आदमी भी दीन इस्लाम से अलग नहीं हुआ। यह पाबन्दी तीन सालों तक क़ायम रही यहां तक कि कुछ कुरैशी लोग उठे जिनकी बनू हाशिम से रिष्तेदारियां थी और सहीफे में दर्ज सन्धि को तोड़ दिया और लोगों के बीच इस बात का एलान कर दिया।

जब कुरैश के लोगों ने सहीफ़े को निकाला तो देखा कि दीमक उसे खा गयी थी और ''बिइस्मिक

अल्लाहुम्म के सिवा उसमें कुछ भी बाक़ी नहीं था। इस तरह से मुसलमानों को मुसीबत से नजात मिली और मुसलमान बनू हाशिम मक्का वापस लौट आए लेकिन फिर भी कुरैश के लोग मुसलमानों की दुश्मनी पर बराबर जमे रहे।

शोक भरा साल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब के जिस्म के अलग–अलग अंगों में सख्त बीमारी पैदा हो गयी और वे बिस्तर पर पड़ गए। जब वे मौत की सख्तियों को झेल रहे थे और उनके पास बहुत कम समय बचा था, उस समय रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बिस्तर पर सर के पास इस उम्मीद में बैठे थे कि वे मौत से पहले **"लाइलाह इल्लल्लाह** का इक़रार कर लें, लेकिन उनके पास बैठे हुए उनके बुरे साथी जिनमें अबू जहल भी था, ने ऐसा करने से मना किया। वे लोग कह रहे थे कि क्या तुम अपने बाप दादाओं के दीन को छोड़ दोगे? क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुंह मोड़ लोगे? ये लोग बराबर यही बात कहते रहे, यहां तक कि उनका इन्तिक़ाल शिर्क पर हो गया। तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने चचा के तअल्लुक़ से दोहरा ग़म हुआ, क्योंकि वे कुफ्र की हालत में दुनिया से रुख्सत हुए। अबू तालिब की वफ़ात के लगभग दो महीने बाद खदीजा रजियल्लाहु अन्हाइस दुनिया से कूच कर गयीं, जिन का रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत ही ज़्यादा दुख व पीड़ा हुई और आपके चचा

अबू तालिब और आपकी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इन्तिक़ाल के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपकी क़ौम की यातनाओं में बहुत ज़्यादा बढ़ौतरी हो गयी।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताइफ़ में

कुरैशी बराबर सरकशी ज़ोर आज़माई और मुसलमानों को तकलीफ़ देने पर तैयार रहे तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ़ जाने के बारे में सोचा, इस उम्मीद से कि शायद अल्लाह तआला उन्हें इस्लाम लाने की हिदायत दे दे। ताइफ़ का सफ़र कोई मामुली बात नहीं थी इस वजह से कि ताइफ़ के ऊंचे.ऊंचे पहाड़ों की गोद में स्थित होने की वजह से रास्ता बड़ा ही कठिन है लेकिन ताइफ़ वालों का नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वागत और आपकी दावत को ठुकरा देना बड़ा ही बुरा था। उन्होंने आपकी बात को नहीं सुना बल्कि आपको भगा दिया और आपके पीछे आवारा बच्चों को लगा दिया। उन बच्चों ने आपको पत्थरों से मारा, यहां तक कि आपकी दोनों ऐड़ियां खून से लत पत हो गयीं। अतएव मक्का की ओर वापसी के इरादे से लौट पड़े। उस समय आप हद दर्जा निराश, दुखी और पीड़ित थे। इस दौरान आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाजिर हुए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिष्ता भी था।

जिबरईल अलैहिस्सलाम ने आप से कहा कि अल्लाह ने पहाड़ों के फ़रिष्ते को आपकी सेवा में भेजा है ताकि आप जो चाहें इसे हुक्म दें। पहाड़ों के फ़रिष्ते ने कहाः ''ऐ

मुहम्मद! यदि आप चाहें तो मैं इन्हें दोनों पहाड़ों के बीच रख कर पीस दूं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ''नहीं, मुझे उम्मीद है कि इनकी नस्ल में से ऐसे लोग पैदा होंगे जो केवल अल्लाह ही की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धैर्य और सब्र और अपनी क़ौम की तरफ़ से तकलीफ़ें झेलने के बावजूद उनसे प्यार व मुहब्बत का यह बहुत बड़ा नमूना है

चाँद के दो टुकड़े होने की घटना

मक्का के मुश्रिक विभिन्न तरीक़ों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैर व वाद विवाद पर तैयार रहते थे। उनमें से एक यह था कि वे आपकी रिसालत के सबूत के लिए मोजिज़ात की मांग किया करते थे। उन्होंने इस बात की मांग कई बार की। एक बार उन लोगों ने आप से चाँद को दो टुकड़ा करने को कहा। आपने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उनको दिखाने के लिए चाँद के दो टुकड़े करके दिखा दिए। कुरैश ने लम्बे समय तक इस चीज़ का मुशाहेदा किया, लेकिन वे ईमान से सरफ़राज़ नहीं हुए। उन्होंने यह कहना शुरु कर दिया कि मुहम्मद ने हमारे ऊपर जादू कर दिया था। एक व्यक्ति ने कहाः ''यदि उसने तुम लोगों पर जादू कर दिया था तो वह सभी लोगों पर तो जादू कर नहीं सकता है। अतएव सफ़र से आने वालों का इन्तिज़ार करो। जब कुछ सफ़र करने वाले वापस आए और इस घटना के बारे में पूछा गया तो

उन्होंने कहा, कि हां हमने इस चीज़ का मुशाहिदा किया था। इसके बाद भी कुरैश अपने कुफ्र पर जमे रहे।

इसरा और मेअराज

ताइफ़ से वापसी और वहां यातनाओं और तकलीफ़ों को सहन करने, अबू तालिब की वफ़ात और खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल पर कई तरह की मुसीबतें जमा हो गयीं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने दिलासा दिया। एक रात जबकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे। आपके पास जिबरईल अलैहिस्सलाम बुराक़ जानवर के साथ आए। बुराक़ घोड़े की तरह एक जानवर है जिसके दो बाजू होते हैं और यह बिजली की रफ़्तार से दौड़ता है। अतएव जिबरईल अलैहिस्सलाम ने उस पर रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सवार किया और उन्हें लेकर फ़लस्तीन में मौजूद बैतुल मक़्दिस ले गए। फिर वहां से उन्हें लेकर आसमान पर चढ़े। वहां आपने अपने रब की निशानियों में से बहुत सारी चीज़ों को देखा। आसमान ही पर पांच समय की नमाज़ें फ़र्ज़ की गयीं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमा

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿الإسراء:١﴾

पक है वह जात जिसने अपने बन्दे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा की सैर कराई जिसके

आस पास को हम बरकत वाला बना रखा है ताकी उसे हम अपनी निशानीयां दिखाएं बेशक वह सुनने और देखने वाला है (सूरह बनी इसराइल आयत 1)

सुबह हुई तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी घटना को लोगों से बयान करना शुरु किया जिसकी वजह से काफ़िरों के झुठलाने और उपहास उड़ाने में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय मौजूद लोगों में से किसी ने आपको विवश करने के मक़्सद से बैतुल मक़्सिद की विशेषताएं बयान करने को कहा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके एक एक हिस्से की विशेषता को बयान करना शुरु कर दिया।

मुश्रिकों ने इन सवालों पर ही बस नहीं किया बल्कि उन लोगों ने कहा कि हमें कोई दूसरी दलील चाहिए। आपने फ़रमायाः कि मेरी मुलाक़ात मक्का की तरफ़ आने वाले एक काफ़िले से हुई। आपने आने का समय बताया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम बातें सच साबित हुईं। मगर काफ़िर अपनी दुश्मनी, बैर और न मानने की वजह से गुमराह हुए। मेअराज ही की सुबह जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और आप को पांचों नमाज़ों की कैफ़ियत और उनके समय बताए। इससे पहले नमाज़ दो रकअत सुबह में और दो रकअत शाम में मशरूअ थी।

इस मुद्दत में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को केवल मक्का आने वालों तक सीमित रखा जबकि कुरैश बराबर हक़ से मुंह मोड़ते रहे। नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाफ़िलों से उन की क़यामगाहों में मिलते और उन्हें इस्लाम की दावत देते और उनके लिए इस्लाम की व्याख्या करते। आपका चचा अबू लहब आपके पीछेपीछे जाता और लोगों को आप से और आप की दावत से डराता था। एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वालों की एक जमाअत के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें इस्लाम की दावत दी तो उन लोगों ने आपकी बात को बड़े ध्यान से सुना और आपकी पैरवी करने और आप पर ईमान लाने पर सहमति ज़ाहिर की। मदीना वाले यहूदियों से सुना करते थे कि एक नबी के आने का समय क़रीब आ चुका है।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सामने दावत पेश की तो वे लोग समझ गए कि यही वह नबी हैं जिसका ज़िक्र यहूदी किया करते थे अतएव उन्होंने इस्लाम कुबूल करने में जल्दी की और कहा कि इस मामले में यहूदी तुम से आगे न बढ़ जाएं। ये 6 लोग थे। दूसरे साल मदीना के बारह लोग तशरीफ़ लाए। वे लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए तो आपने उनको दीन इस्लाम की बातें सिखायीं और जब वे मदीना वापस जाने लगे तो उनके साथ मुसअब बिन उमैर रजियल्लाहु अन्हु को कुरआन की शिक्षा और दीनी अहकाम सिखाने के लिए भेजा। अल्लाह की कृपा से इब्ने उमैर रजियल्लाहु अन्हु ने मदीना के समाज पर अच्छा असर छोड़ा। एक साल बाद जब मक्का वापस हुए तो उनके साथ मदीना के 72 मर्द और 2 औरतें थीं। वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए

और आपके हाथ पर दीन की मदद और उसके कामों को अंजाम देने पर बैअत की और इसके बाद मदीना वापस लौटे

दावत का नया मर्कज़

मदीना हक़ और हक़ वालों के लिए एक महफूज़ पनाहगाह बन गया। अतएव उसकी तरफ़ मुसलमानों की हिजरत का सिलसिला शुरु हो गया, अलबत्ता कुरैशियों ने मुसलमानों को हिजरत से रोकने का इरादा पक्का कर लिया। इसकी वजह से कुछ मुहाजिरों को बड़े कठिन हालात व जुल्म व अत्याचार का सामना करना पड़ा। यही वजह है कि मुसलमान कुरैश से छुप कर हिजरत किया करते थे। अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु भी हिजरत की इजाज़त मांगा करते थे मगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कहतेः ''जल्दी न मचाओ, शायद अल्लाह तुम्हारा कोई साथी बना दे। यहां तक कि बहुत से मुसलमान हिजरत कर गए।

कुरैश ने मुसलमानों की हिजरत और मदीना में जमा होने को देखा तो उनका पागल पन हद से ज़्यादा बढ़ गया और उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी दावत के ग़ालिब होने का डर सताने लगा। अतः उन्होंने इस बारे में आपस में सलाह व मश्वरा किया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने पर सहमत हो गए। अबू जहल ने कहाः ''मेरा विचार है कि हम अपने–अपने खानदान में से एक एक ताक़तवर नवजवान को तलवार थमाएं। वे लोग मिल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरें और एक साथ टूट पड़ें, इस तरह

से उनका खून पूरे क़बाइल में तक़सीम हो जाएगा और बनू बनु हाशिम सभी लोगों से दुश्मनी की हिम्मत नहीं कर पाएंगे। इधर अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस साजिश से आगाह कर दिया तो अल्लाह से इजाज़त मिलने के बाद अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से हिजरत के बारे में मश्वरा किया और रात में अली रजियल्लाहु अन्हु से कहा कि वे आप की जगह सो जाएं ताकि लोगों को एहसास हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर ही में हैं।

साज़िशी लोग आए और उन्होंने घर को चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु को बिस्तर पर देखा तो समझा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अतएव वे लोग आपके निकलने का इन्तिज़ार करने लगे ताकि वे घात लगा कर हमला करें और आपको क़त्ल कर दें। इस दौरान रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच से निकले। वे लोग घर को चारों ओर से घेरे हुए थे आपने उनके सरों पर मिट्टी डाली जिससे अल्लाह ने उनकी आँखों की रौशनी खत्म कर दी और उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाहर निकलने का पता ही न लग सका। आप अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु के पास गए और दोनों एक साथ मदीना की तरफ़ निकल पड़े और ग़ारे सौर में छुप गए।

क़ुरैश के नवजवान आपका इन्तिज़ार करते रहे यहां तक कि सुबह हो गयी। सुबह हुई तो अली रजियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर से उठे तो वह

अपने हाथ मलते रह गए। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में मालूम किया लेकिन उन्होंने आपके बारे में कुछ नहीं बताया जिस पर उन लोगों ने आपको मारा पीटा मगर इससे कुछ हासिल नहीं हुआ। इसके बाद कुरैश ने आपकी तलाश में हर ओर लोगों को भेजा और ज़िन्दा या मुर्दा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाने वाले के लिए सौ ऊंटों का इनाम रखा। तलाश करने वाले ग़ार के मुंह तक पहुंच गए जिस में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथी अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु छुपे हुए थे यहां तक कि यदि उनमें से कोई अपने पांव के नीचे देखता तो वह आप दोनों को देख लेता, जिसे देख कर अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अत्यन्त दुखी हो गए। इस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहाः ''अबु बक्र इन दो लागों के बारे में तुम क्यों परेशान हो रहे हो जिनके साथ तीसरा अल्लाह है। ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है

कुरैश के लोगों ने आप दोनों को नहीं देखा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के दोस्त ग़ार में तीन दिन तक ठहरे, फिर मदीना के लिए चल दिए। रास्ता बहुत लम्बा था और धूप बहुत तेज़ थी। दूसरे दिन की शाम में आप दोनों का गुज़र उम्मे माअबद नामी एक महिला के खेमे से हुआ। आप दोनों ने उनसे खाना पानी मांगा, लेकिन इन्हें उनके पास कुछ नहीं मिला, अलबत्ता एक कमज़ोर बकरी थी जो चलने की तकलीफ़ की वजह

से चरागाह नहीं जा सकी थी। उसके थनों में दूध की एक बूंद का भी नामो निशान नहीं था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बकरी के पास गए और उसके थन पर हाथ फेरा अतएव दूध का फ़व्वारा बहने लगा। आपने उस बकरी को दुहा और एक बड़ा बर्तन भरा। यह देखकर उम्मे माअबद हैरान व परेशान हो गयीं। आप दोनों ने उसे पिया यहां तक कि पेट भर गया। फिर दूसरी बार बकरी को दुहा और बर्तन भर जाने के बाद उसे उम्मे माअबद के पास छोड़ दिया और अपना सफ़र जारी रखा।

उधर मदीना वाले रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहुंचने का मदीना से बाहर निकल कर रोज़ाना इन्तिज़ार करते थे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना पहुंच गए तो वह लोग आपके पास आए और आपको खुश आमदीद कहा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना के क़रीब कुबा नाम की जगह पर क़याम किया और चार दिन तक ठहरे इसी मुद्दत में आपने एक मस्जिद की बुनियाद डाली। वह मस्जिद कुबा इस्लाम में तामीर की जाने वाली सबसे पहली मस्जिद है। पांचवें दिन आप मदीना की ओर चल पड़े। बहुत सारे अन्सारी सहाबा की इच्छा थी कि वे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत से सरफ़राज़ हों और उन्हें आपकी मेहमान नवाज़ी का गौरव प्राप्त हो। अतएव वे ऊंटनी की लगाम पकड़ लेते थे जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनका याुक्रिया अदा करते और कहतेः ''इसे छोड़ दो क्योंकि यह अल्लाह की ओर से काम पर है। ऊंटनी जब उस मक़ाम पर पहुंची जहां

अल्लाह ने उसे ठहरने का हुक्म दिया था तो वह बैठ गयी। आप उससे नहीं उतरे, ऊंटनी उठी और कुछ दूर फिर चली, फिर मुड़ी और वापस आ गयी और पहली जगह रुक गयी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बार ऊंटनी से उतर गए। यही मस्जिदे नबवी की जगह थी और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू अय्यूब अन्सारी रजियल्लाहु अन्हु के यहां क़याम किया।

अली रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मक्का में तीन दिन तक ठहरे इस दौरान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रखी हुई अमानतों को उनके मालिकों को वापस कर दिया और फिर मदीना के लिए रवाना हो गए और आपको कुबा में पा लिया

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना में

जहां रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी बैठी थी उस जगह को उसके मालिकों से खरीदने के बाद आपने मस्जिद की तामीर वहीं की और मुहाजिरीन जो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का से तशरीफ़ लाए थे और अन्सार अर्थात मदीना वालों में से जिन लोगों ने मुहाजिरों की मदद की, इनके बीच भाइचारा कराया इस तौर कि हर अन्सारी सहाबी का मुहाजिरों में से एक को भाई बना दिया जो उसके माल में शरीक हो। इसके बाद अन्सार व मुहाजिरीन एक साथ काम करने लगे और उनके बीच भाई चारगी का रिश्ता मज़बूत हो गया।

कुरैश के मदीना के यहूदियों से दोस्ताना संबंध थे। यही वजह है कि यहूदी भी अपने तौर पर मुसलमानों के बीच बेचैनी और मतभेदों के बीज बोना चाहते थे दूसरी तरफ़ कुरैश के लोग मुसलमानों को खत्म करने की धमकी दिया करते थे। अतएव मुसलमानों को आन्तरिक व बाहरी हर ओर से खतरा था, मामला इतना संगीन हो गया था कि सहाबा किराम रातों में हथियार लेकर सोया करते थे। इस तरह के खतरनाक हालात में अल्लाह तआला ने जिहाद की इजाज़त दी जिसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुश्मन की चलत फिरत पर निगाह रखते, मुश्रिकों को मुसलमानों की ताक़त का एहसास दिलाने और उनके दिलों में डर बैठाने के उद्देश्य से तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने की खातिर इस्लामी सेना की टुकड़ियों को तर्तीब देने लगे ताकि वे लोग सुलह कर लें और इन्हें इस्लाम फैलाने और उस पर अमल के लिए आज़ाद छोड़ दें। इसी उद्देश्य से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ क़बीलों के साथ आपसी सहयोग की सन्धि भी की।

बदर की जंग

एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम से लौट रहे तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने का इरादा किया। इस उद्देश्य के तहत आप 313 लोगों के साथ निकल पड़े। आपके साथ केवल दो घोड़े और सत्तर ऊंट थे जबकि कुरैश के काफ़िले में एक हजार ऊंट थे जिसकी क़ियादत अबू सुफ़ियान कर रहा था और उसके साथ

चालीस लोग थे। अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के निकलने का आभास हो गया तो उसने एक क़ासिद मक्का भेजा ताकि वह उन्हें पूरी घटना की खबर पहुंचा दे और उन से मदद तलब करे। इधर अबू सुफ़ियान ने अपना रास्ता बदल दिया और दूसरी राह पर चल पड़ा, जिसकी वजह से मुसलमानों को वह क़ाफ़िला न मिल सका। दूसरी ओर क़ुरैश एक बड़े लशकर के साथ निकले जिनमें एक हजार जंगजू थे। इस दौरान उनके पास अबू सुफ़ियान के पास से क़ासिद पहुंचा और उसने क़ाफ़िले के सही और सुरक्षित बच जाने की सूचना दी और उन्हें मक्का वापस जाने को कहा। लेकिन अबू जहल ने वापसी से इन्कार कर दिया और लशकर ने अपना सफ़र जारी रखा।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के निकलने की खबर पहुंची तो आपने सहाबा से मशवरा किया। तमाम लोगों ने काफ़िरों और उनके सैनिकों का सामना करने की राय दी। 17 रमज़ानुल मुबारक सन 2 हिजरी की सुबह दोनों पक्षों की मुठ भेड़ हुई और दोनों के बीच खतरनाक और घमासान जंग हुई और मुसलमानों की जीत के साथ जंग का खात्मा हुआ। 14 मुसलमान शहीद हुए जबकि मुश्रिकों में से सत्तर मारे गए और इतने ही लोग गिरफ़्तार भी हुए। जंग के दौरान ही रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी और उसमान रजियल्लाहु अन्हु की जीवन साथी रुक़य्या का इन्तक़ाल हो गया जिनके साथ उनके पति मदीना में ठहरे हुए थे और इस जंग में शरीक नहीं हो सके थे क्योंकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी बीमार

पत्नी के पास रहने का हुक्म दिया था। जंग के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसमान रजियल्लाहु अन्हु से अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम की शादी कर दी, इसी वजह से उसमान रजियल्लाहु अन्हु को ज़ुन्नूरैन कहा जाता है। क्योंकि उनके निकाह में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बेटियां आयीं।

जंगे बदर के बाद मुसलमान अल्लाह की मदद से खुश होकर मदीना वापस हो गए। उनके साथ क़ैदी और ग़नीमत का माल भी था। क़ैदियों में से कुछ ने अपनी जान का फ़िदया दिया और कुछ लोगों को बिना फ़िदया के छोड़ दिया गया और कुछ लोगों का फिदया यह था कि वे दस मुसलमान बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखाएं।

उहुद की जंग

बदर की जंग के एक साल बाद यह जंग मुसलमानों और काफ़िरों के बीच पेश आयी। मुश्रिकों ने बदर की जंग में पराजित होने के बाद मुसलमानों से बदला लेने का इरादा किया। अतएव वे लोग तीन हज़ार सैनिकों के साथ निकल पड़े। मुसलमानों ने उनका सामना लगभग सात सौ आदमियों से किया। शुरु में मुसलमान विजयी रहे और काफ़िरों पर ग़ालिब रहे और मुश्रिकीन मक्का की तरफ़ भाग खड़े हुए लेकिन मुश्रिकीन दूसरी बार लौटे और पहाड़ की तरफ़ से मुसलमानों पर टूट पड़े जिधर से वे तीर अन्दाज़ अपनी जगह से हट गए थे जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नियुक्त किया था और माले

ग़नीमत जमा करने के उद्देष्य से पहाड़ के ऊपर से उतर गए थे तो इस जंग में मुश्रिकों का पलड़ा भारी रहा

ग़ज़वए खन्दक़

जंगे उहूद के बाद कुछ यहूदी मक्का वालों के पास गए और उनको मदीना में मुसलमानों से लड़ने पर उभारा, इसी के साथ उन्होंने मदद करने व पूरे समर्थन का वायदा किया तो मुश्रिकों ने उनकी बात मान ली। इसके बाद यहूदियों ने दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के साथ जंग पर आमादा किया तो उन्होंने भी इस तरह से उनकी बात मान ली। अतएव मुश्रिकीन हर जगह से मदीना के आस पास जमा होने लगे यहां तक कि मदीना के गिर्द दस हज़ार जंगजू जमा हो गए। नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत फिरत का पता था, इस वजह से आपने इस मामले में सहाबा किराम से मश्वरा किया तो सलमान फ़ारसी रजियल्लाहु अन्हु ने आपको मश्वरा दिया कि मदीना के जिस ओर पहाड़ नहीं हैं उधर खन्दक़ खोदी जाए। मुसलमानों ने खन्दक़ खोदने में हिस्सा लिया अतएव जल्द ही खन्दक़ खोद ली गयी और दूसरी ओर मुश्रिकीन मदीना के बाहर लगभग एक महीना कैम्प लगाए रहे। वे खन्दक़ में घुसने की हिम्मत न कर सके। इसके बाद अल्लाह ने सख्त आंधी भेजी जिस से उनके खेमे उखड़ गए। उस दिन से उनके दिलों में भय बैठ गया और जल्द ही अपने घरों को भाग खड़े हुए। अल्लाह ने अकेले ही तमाम जमाअतों को पराजय से दोचार किया और मुसलमानों को विजयी किया।

फतहे मक्का

सन 8 हिजरी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का पर चढ़ाई की और इसे फ़तह करने का फ़ैसला किया। आप दस हजार फ़ौज के साथ 10 रमजानुल मुबारक को निकले और बिना जंग व लड़ाई के मक्का में दाखिल हो गए। जहां कुरैश ने हथियार डाल दिए और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह से नवाज़ा। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम की तरफ गए, खाना काबा का तवाफ़ किया और उसके अन्दर दो रकअतें अदा कीं। इसके बाद काबा के अन्दर और उसके ऊपर मौजूद तमाम बुतों को तोड़ डाला। इसके बाद काबा के दरवाज़े पर खड़े हुए। उस समय नीचे कुरैश के लोग खड़े इस बात का इन्तिज़ार कर रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके साथ क्या मामला करते हैं।

इस मौक़े पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः ''ऐ कुरैश की जमाअत! तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम लोगों के साथ क्या करुंगा? उन लोगों ने कहाः ''भलाई की उम्मीद है कि आप बहुत ही शरीफ़ हैं और शरीफ व्यक्ति के बेटे हैं। आपने फ़रमायाः ''जाओ तुम सब आज़ाद हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दुश्मनों की माफ़ी के मामले में एक बेहतरीन नमूना क़ायम किया जिन्होंने आप के सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम को सताया और उन्हें तरह तरह की यातनाएं दीं और देश से निकाल दिया।

मक्का की फ़तह के बाद लोग गिरोह के गिरोह दीने इस्लाम में दाखिल होने लगे। सन 10 हिजरी में रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज किया। आपने अपनी ज़िन्दगी में यही एक हज किया। आप के साथ एक लाख से अधिक लोगों ने हज का फ़रीजा अदा किया। हज की अदाएगी के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस लौट गए।

वफ़ूद की आमद और बादशाहों के नाम खुतूत

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन इस्लाम ग़लबा पा गया और आपकी दावत फैल गयी, अतएव हर तरफ से वफ़ूद का आना और उनका इस्लाम में दाखिले के एलान का सिलसिला शुरु हो गया।

इसी तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की तरफ दावत देने के मक़सद से बादशाहों, क़बीलों के अमीरों और हाकिमों के नाम खुतूत भेजे। कुछ लोगों ने आपकी दावत स्वीकार की और आप पर ईमान लाए और कुछ ने बेहतर अन्दाज़ से जवाब दिया और आपकी सेवा में उपहार भेजे। अलबत्ता वे इस्लाम में दाखिल नहीं हुए और कुछ ऐसे भी थे जो गुस्सा हो गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्र को फाड़ दिया, जैसा कि शाहे फ़ारस ने किया। उसने आपके खत को फाड़ दिया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए बद दुआ की और कहाः ''अल्लाह उसकी हुकूमत को टुकड़े टुकड़े कर दे। अतएव कुछ ही

दिनों बाद उसके बेटे ने उसके खिलाफ़ बग़ावत करके उससे बादशाहत छीन ली।

शाहे मिस्र मक़ोक़स ने इस्लाम तो स्वीकार नहीं किया, अलबत्ता उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिद का सम्मान किया और उनके हाथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तोहफ़े भेजे। क़ैसर रूम ने भी इसी तरह से क्या। उसने भले तरीक़े से जवाब दिया और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्मान किया और आपके लिए हदया भेजा।

बहरैन के शासक मुन्ज़र बिन सावी के पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खत पहुंचा तो उसने अपने पास मौजूद लोगों के सामने उसे पढ़ा, अतएव कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इन्कार किया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज से वापसी के ढाई महीने बाद आप की बीमारी का सिलसिला शुरु हुआ और दिन प्रति दिन रोग में बढ़ौतरी होती चली गयी। जब आप लोगों को नमाज़ पढ़ाने की ताक़त न रख सके तो अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से लोगों की इमामत करने को कहा।

पीर के दिन 12 रबीउल अव्वल सन 11 हिजरी में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रफ़ीक़े आला से जा मिले। आपने 63 साल की उम्र पायी। जब इसकी खबर सहाबा किराम को मिली तो ऐसा लगता था कि वे होश व

हवास और अपनी अक़्ल खो बैठेंगे और उन लोगों को आपकी वफ़ात का विश्वास ही नहीं हुआ यहां तक कि अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु ने उनको शान्त करने के उद्देश्य से खुतबा दिया और बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्सान हैं और दूसरे लोगों की तरह उनको भी मौत से दोचार होना पड़ेगा। इसके बाद लोग शान्त हुए। आपकी पत्नी आयशा रजियल्लाहु अन्हाके कमरे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ल और कफन दफ़न का काम अंजाम दिया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का में नुबुवत से पहले चालीस साल और नुबुवत के बाद 13 साल और मदीना मुनव्वरा में नुबुवत के बाद 10 साल क़याम किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मुसलमानों ने आम सहमति से अबू बक्र ;रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफ़ा चुन लिया। अतएव वह पहले खलीफ़ा राशिद थे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइशी खूबियां

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरमियाना क़द थे। आप न तो बहुत ज़्यादा लम्बे थे और न ही छोटे क़द के थे। आपके दोनों मूंढों के बीच फ़ासला था, आपके अंग सन्तुलित थे।, मुनासिब थे, सीना चौड़ा था। आपका चेहरा लोगों में सबसे ज़्यादा खूबसूरत था। आप सफ़ेद थोड़े सुर्ख थे। आपका चेहरा गोल था, आँखें सुरमई थीं, नाक पतली थीं, मुंह खूबसूरत था, दाढ़ी घनी थी, अनस रजि0 बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की खुशबू से बेहतर न तो अम्बर की खुश्बू को पाया और न हीं मुश्क को और मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ से ज़्यादा नर्म किसी दूसरे इन्सान का हाथ नहीं देखा

आपका चेहरा हंसता हुआ था, हमेशा मुस्कुराया करते थे। आपकी आवाज़ बड़ी उमदा थी। आप कम बोलने वाले थे। आपके बारे में अनस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आप लोगों में सबसे ज़्यादा हसीन थे और सबसे बड़े दानी थे और सबसे बड़े बहादुर थे।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ अच्छे अख़लाक़

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर थे। अली रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब कोई मुश्किल समय पेश आता और हमारा सामना किसी क़ौम से होता तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिए हम बचा करते थे। आप लोगों में सब से बड़े दानी थे। आप किसी मांगने वाले को महरूम नहीं किया करते थे। इसी तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा सूझ बूझ वाले थे। आप अपने नफ्स के लिए बदला नहीं लेते थे और न ही अपने नफ्स के लिए गुस्सा होते थे, अलबत्ता जब अल्लाह की हुरमतों की पामाली की जाती तो आप अल्लाह के लिए बदला लिया करते थे। आप की निगाह में हक़ के मामले में क़रीबी और दूर और ताक़तवर व कमज़ोर सभी बराबर होते और आपने ताकीदी तौर पर कहा था कि किसी को

दूसरे पर तक़वा की बुनियाद पर फ़ज़ीलत हासिल है और सभी लोग बराबर हैं। और पिछली क़ौमों की तबाही का कारण यह था कि उनमे जब कोई शरीफ इन्सान चोरी करता तो उसे छोड़ दिया करते थे और जब कमज़ोर इन्सान चोरी करता तो उसको सज़ा दिया करते थे। आपने इर्शाद फ़रमायाः **"अल्लाह की क़सम! यदि फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका हाथ काट डालता।**

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी खाने में दोश नहीं निकालते थे। यदि आपकी इच्छा होती तो खाते, वर्ना छोड़ दिया करते थे। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर वालों पर महीने दो महीने ऐसे भी आते जिनमें उनके घर में आग नहीं जलाई जाती। उनकी खूराक खजूर और पानी था। आप भूख की सखती में अपने पेट पर एक या दो पत्थर बांधा करते थे। आप जूती टांक लेते, कपड़े में पेवन्द लगाते और घर में अपने बाल बच्चों की मदद करते थे। आप बीमारों की बीमार पुरसी करते। आप बड़े ही खाकसार थे। आपको मालदार या फ़क़ीर और नींच और शरीफ में से जो कोई दावत देता, आप उसकी दावत स्वीकार कर लेते। आप मिसकीनों से मुहब्बत करते और उनके जनाज़ों में शिर्कत करते थे। बीमारों की बीमार पुरसी करते। किसी फ़क़ीर को उसकी मोहताजी की वजह से कमतर नहीं जानते और किसी बादशाह की बादशाहत से भय नहीं खाते थे। आप घोड़े, ऊंट, गधे और खच्चर में से हरेक की सवारी किया करते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुख, चिंता व परेशानी की अधिकता के बावजूद बहुत ज़्यादा मुस्कुराते थे। आप खुश्बू पसन्द करते और बदबू को ना पसन्द किया करते थे। अल्लाह ने आपको ऊंचे दर्जे का अखलाक़ और बेहतरीन अमल से नवाजा था और आप को ऐसा ज्ञान प्रदान किया था कि उस जैसा ज्ञान और किसी को प्रदान नहीं किया था।

जबकि आप अनपढ़ थे और पढ़ना लिखना नहीं जानते थे और इन्सानों में से कोई आपका उस्ताद नहीं हुआ। यह कुरआन करीम अल्लाह की ओर से आप पर नाज़िल हुआ है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है:

قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الإِنْسُ وَالجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا القُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا﴾ [الإسراء:٨٨]

यानी ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप कह दिजीए कि तमाम इन्सान व जिन्नात मिलकर इस कुरआन की तरह लाना चाहें तो नही ला सक्ते अगर वह लोग इस काम के लिए आपस में एक दुसरे के मदतगार भी हो जाएं (सूरह बनी . इसराईल . आयत 88)

आपके अनपढ़ होने में एक बड़ी हिकमत उन झूठों के शक का पूरी तरह इन्कार है कि आपने कुरआन करीम को लिखा है या आपने किसी से सीखा है या पिछली क़ौमों की किताबों से हासिल किया है।

आप के कुछ मोजिज़ों का बयान

आपका सबसे बड़ा मोजिज़ा जो क़ियामत तक बाक़ी रहेगा वह कुरआन करीम है जिसने अरबी भाषा के माहिरों को विवश कर दिया, अरबी के विज्ञानों को दहशत का शिकार बना दिया और अल्लाह ने तमाम लोगों को चुनौती दी कि इस जैसी दस सूरतें ही लाकर दिखाएं या एक ही सूरह लाएं या इस जैसी कोई एक ही आयत लाएं और मुश्रिकों ने भी इसके गौरव का एतिराफ़ किया है।

आपके मोजिज़ों में से एक यह है कि मुश्रिकों ने जिस समय आपसे निशानी की मांग की तो आपने उनके लिए चाँद के दो टुकड़े होने का मन्ज़र दिखाया कि चाँद के दो हिस्से हो गए। कई बार आपकी उंगलियों के बीच से पानी जारी हुआ, आपकी हथेली में कंकरी ने तसबीह पढ़ी। आपने उस कंकरी को अबू बक्र, फिर उमर और उसके बाद उसमान रजियल्लाहु अन्हु की हथेली में रखा तो उससे ''सुब्हानअल्लाह की आवाज़ आयी। सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम खाने से तसबीह पढ़ने की आवाज़ सुनते। आपसे पत्थर और पेड़ सलाम करते और जब एक यहूदिया ने आपको मार डालने के इरादे से ज़हर लगा बकरी का दस्ता हदया किया तो दस्ता आपसे बात करने लगा। आपने एक बकरी के थन पर हाथ फेरा जिसमें दूध का नामो निशान नहीं था तो उसमें दूध जमा हो गया। आपने उसे दुहा, आपने उसे स्वयं पिया और अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु को भी पिलाया।

हज़रत अली रजियल्लाहु अन्हु की आँखें आयी हुई थीं जिनमें आपने अपनी थूक लगायी तो वे उसी पल ठीक हो गयीं। किसी सहाबी का पांव घायल हो गया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पर अपना हाथ फेरा तो वह ठीक हो गया। आपने अनस रजि0 के लिए उम्र में बढ़ौतरी की दुआ की, माल में अधिकता और औलाद के बारे में दुआ की कि अल्लाह उनको इन चीज़ों में बरकत प्रदान करे तो उनके 120 बच्चे पैदा हुए, उनके खजूर के बाग़ में साल में दो बार फल लगता था जबकि खजूर का मामूल यही है कि उनमें साल में एक बार फल लगता है और उन्होंने 120 साल की उम्र पायी। किसी सहाबी ने अकाल की शिकायत की, उस समय आप मिम्बर पर थे। आपने अपने दोनों हाथों को उठा कर अल्लाह से दुआ की। उस समय आसमान पर बादल भी नहीं था कि इस दौरान पहाड़ों के जैसे बादल छा गए और दूसरे जुमे तक मूसला धार बारिश हुई, यहां तक कि ज़्यादा बारिश होने की शिकायत की गयी तो आपने अल्लाह से दुआ की और बारिश रुक गयी और लोग धूप में चलते हुए निकले।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक साअ जौ और एक बकरी में एक हज़ार खन्दक़ खोदने वाले लोगों को खिलाया। सभी लोगों ने पेट भर कर खाया और खाना कुछ भी कम नहीं हुआ था। इसी तरह बशीर बिन साअद रजियल्लाहु अन्हु की बेटी अपने बाप और मांमू के लिए थोड़ी खजूर लेकर आयी तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसमें से पूरे ख़न्दक़ के लोगों को खिलायी। इसी तरह अबू हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु के ज़ादे

राह से पूरे लश्कर को खिलाया यहां तक कि सभी लोगों का पेट भर गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सौ कुरैश के जवानों के बीच से उनके चेहरे पर मिट्टी डालते हुए निकल गए जबकि वे लोग आपको क़त्ल करने के लिए आपका इन्तिज़ार कर रहे थे और उन लोगों ने देखा तक नहीं। और सुराक़ा बिन मालिक ने आपको क़त्ल करने के उद्देश्य से आपका पीछा किया, मगर ज्यों ही वह आपके क़रीब पहुंचा, आपने उसके लिए बद दुआ की जिससे उसके घोड़े का पांव ज़मीन में धंस गया।

सीरते रसूल से हासिल होने वाली शिक्षाएं

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम से हंसी मज़ाक़ किया करते थे लेकिन इस सूरत में भी हक़ बात ही कहा करते थे। इसी तरह अपने बाल बच्चों से दिल लगी किया करते थे और छोटे बच्चों का ख्याल रखा करते थे और अपने समय का एक हिस्सा उन्हें दिया करते थे और उनकी ताक़त और समझ के अनुसार उनके साथ मामला किया करते थे और उनकी नफ़सियात को समझते थे। आप अपने सेवक अनस रजियल्लाहु अन्हु से मज़ाक़ करते और कभी उन्हें ''या जल उज़नैन अर्थात ऐ दो बड़े कानों वाले कह कर पुकारते

एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आया और कहाः''ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे सवारी प्रदान कर दीजिए। आपने उससे मज़ाक़ में कहाः ''हम तो तुम्हें ऊंटनी के बच्चे पर सवार कराएंगे। वह बोला ''मैं

ऊंट के बच्चे का क्या करुंगा? तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ''आखिर हर ऊंट ऊंटनी का बच्चा ही तो होता है। (अबु दाऊद 4998)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा मुस्कुराते और सहाबा किराम के सामने आपके चेहरे पर खुशी हुआ करती थी। सहाबा किराम आपसे भली बातें ही सुना करते थे। अतएव जरीर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने जब से इस्लाम स्वीकार किया, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दीदार से रोका नहीं और मुस्कुरा कर ही देखा और मैंने आप से इस बात का शिक्वा किया कि मैं घोड़े पर ठीक ढंग से नहीं बैठ पाता हूं तो आपने दुआ की ''ऐ अल्लाह! तू इसे साबित क़दम रख और उसे हिदायत की राह दिखाने वाला और हिदायत पाने वाला बना दे। इस दुआ के बाद वह कभी घोड़े से नहीं गिरे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने रिष्तेदारों से भी दिल लगी किया करते थे। अतएव एक बार अपनी बेटी फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाके घर तशरीफ़ ले गए तो देखा अली रजियल्लाहु अन्हु मौजूद नहीं थे। आपने पूछाः ''अली कहां हैं? उन्होंने बतायाः ''मेरे और उनके बीच कुछ झगडा हो गया था। वह मुझ से नाराज़ होकर घर से चले गए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अली रजियल्लाहु अन्हु के पास गए। वे मस्जिद में लेटे हुए थे और उनकी चादर गिर गयी थी और उनके जिस्म पर मिट्टी लग गयी थी। अतएव रसूले करीम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम उनके जिस्म से मिट्टी यह कहते हुए झाड़ने लगे ''ऐ अबू तुराब उठो, ऐ अबू तुराब उठो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बच्चों के साथ मामला

आप बच्चों के साथ भी अपने ऊंचे और महान अखलाक़ का मुज़ाहिरा किया करते थे। आप अपनी पत्नी आयशा रजियल्लाहु अन्हाके साथ दौड़ का मुक़ाबला किया करते और उन्हें सहेलियों के साथ खेलने दिया करते थे। आइशा रजियल्लाहु अन्हाबयान करती हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गुड़ियों से खेला करती थी और मेरी कुछ सहेलियां थीं जो मेरे साथ खेला करती थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में दाखिल होते तो वे छुप जाया करती थीं। आप उन्हें मेरे साथ भेजते थे तो वे आकर मेरे साथ खेलती थीं।

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच्चों का ख्याल रखते और उनसे दिल लगी किया करते थे। अतएव अब्दुल्लाह बिन शद्दाद अपने बाप से नक़ल करते हैं कि उन्होंने बयान किया ''एक बार अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मग़रिब या इशा में से किसी नमाज़ के लिए तशरीफ लाए। आप हसन या हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को उठाए हुए थे। आगे बढ़कर आपने उन्हें एक तरफ़ बैठा दिया और नमाज़ के लिए तकबीर कह कर नमाज़ शुरु कर दी। सज्दे में गए तो उसे काफ़ी लम्बा कर दिया, मैंने सर उठाकर देखा तो बच्चा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्त पर सवार था और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे ही में थे। मैं यह देखकर दोबारा

सज्दे में चला गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब नमाज़ अदा कर चुके तो लोगों ने अर्ज़ कियाः ''ऐ अल्लाह के रसूल! आपने आज नमाज़ में बहुत ही लम्बा सज्दा किया, मैं तो समझा कि शायद कोई हादसा पेश आ गया या आप पर वहय नाज़िल हो रही है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ''इन में से कुछ भी नहीं हुआ, अलबत्ता मेरा यह बेटा मेरे ऊपर सवार हो गया था, मैंने इसे इसकी इच्छा के पूरा होने से पहले जल्दी इसे पुश्त से उतारना बेहतर नहीं समझा। अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में सबसे ज़्यादा अच्छे अख्लाक़ के मालिक थे। मेरा एक छोटा भाई था, उसे आप कहतेः ''अबू उमैर! नुग़ैर का क्या हुआ? नुग़ैर एक छोटी चिड़िया थी जिससे वह खेला करता था। इस तरह से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस छोटे बच्चे का दिल बहलाते थे।

घर वालों के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामला

अहले खाना के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बरताव बहुत अच्छा था। आप बहुत खाकसार थे। हर समय घर वालों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगे रहते थे। आप एक औरत के मक़ाम व मरतबे को एक इन्सान, कि हैसियत से देखते थे चाहे वह मां, हो या पत्नी हो या बेटी हो

एक आदमी ने आपसे सवाल किया कि मेरे अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है? आपने फ़रमायाः ''तुम्हारी मां फिर तुम्हारी मां इसके बाद भी तुम्हारी मां, और उसके बाद तुम्हारा बाप। इसी तरह आपने बयान फ़रमायाः ''जिसने अपने मां बाप को या उनमें से किसी एक को पाया और उनके साथ सद व्यवहार नहीं किया और इसी हाल में उनकी मौत भी हो गयी तो वह जहन्नम में दाखिल होगा और अल्लाह उससे दूरी बनाएगा।

आपकी पत्नी जब बर्तन से पानी पिया करतीं तो आप उस बर्तन को लेते और उसी जगह अपना मुंह रखते जहां उन्होंने रखा होता और आप कहा करते थेः ''तुम मे से बेहतर इन्सान वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे ज़्यादा बेहतर है। और मैं अपने घर वालों के लिए तुम में सबसे ज़्यादा बेहतर हूं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतें

मेहरबानी के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः ''रहम करने वालों पर अल्लाह तआला रहम करता है, ज़मीन वालों पर रहम व करम का मामला करो, तुम पर आसमान वाला रहम व करम का मामला करेगा। हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस खूबी व मेहरबानी के सबसे ऊंचे मक़ाम पर थे। यदि हम छोटे, बड़े, रिष्तेदार और अजनबी लोगों के साथ आपके मामलों को देखें तो यह चीज़ बहुत ही खुले तौर पर निखर कर सामने आती है।

आपकी मुहब्बत, शफ़क़त व रहमत ही का नतीजा है कि जब आप किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेते तो नमाज़ को आप हल्की कर दिया करते थे और उसे लम्बी नहीं किया करते थे। क़तादा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः ''मैं नमाज़ में खड़ा होता हूं और सोचता हूं कि नमाज़ को लम्बी करूं, इतने में बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो मैं अपनी नमाज़ को हल्की कर देता हूं इस अन्देशे से कि इस बच्चे की मां पर भारी न गुज़रे।

उम्मत पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत का हाल यह था कि वे हमेशा चाहते कि सभी लोग दीन इस्लाम में दाखिल हो जाएं। एक यहूदी लड़का जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा किया करता था बीमार हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे देखने तशरीफ़ ले गए। आप उसके सर के पास बैठ गए और उससे कहाः ''इस्लाम स्वीकार कर लो। बच्चे ने अपने बाप को देखा जो उसके पास ही खड़ा था उसके बाप ने उससे कहाः अबू क़ासिम की बात मान लो। इस तरह बच्चे ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और थोड़ी देर के बाद वफ़ात पा गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास से यह कहते हुए निकले ''तमाम प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने इसे जहन्नम की आग से बचा लिया।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब्र

जहां तक रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब्र की बात है तो आपकी पूरी ज़िन्दगी सब्र व धैर्य और जिहाद व मुजाहिदों से इबारत है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन की पहली आयत के नाज़िल होने के बाद से लेकर ज़िन्दगी के आखिरी पल तक सब्र व धैर्य का मुज़ाहिरा करते रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहली वही के समय फ़रिष्ते से मुलाक़ात के अवसर पर ही मालूम हो गया कि इस राह में उन्हें किन मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। उस समय आपको खदीजा रजियल्लाहु अन्हावरक़ा बिन नोफ़िल के पास लेकर गयीं। वरक़ा ने कहाः ''काश मैं उस समय ज़िन्दा होता जबकि आप की क़ौम के लोग आपको मक्का से निकाल देंगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुछाः ''क्या वे लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहाः हां, क्यों कि आप जिस चीज़ को लेकर आए हैं उसे लेकर जो कोई इन्सान आया है उसे तकलीफ़ दी गयी है। अतएव पहली फुरसत में ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आपको परिशानियों, कष्टों व यातनाओं और दुश्मनी के लिए तैयार कर लिया।

जिन घटनाओं से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब्र व इस्तक़ामत का पता चलता है उनमें से यह भी है कि आप मक्का में अपने पालनहार का सन्देश पहुंचा रहे थे और इस दौरान अपनी क़ौम, घर परिवार वालों की तरफ़ से दी जाने वाली शारीरिक यातनाओं को सहन किया इन्हीं

घटनाओं में से एक घटना वह है जो सही बुखारी में मौजूद है कि उर्वह बिन जुबैर ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजियल्लाहु अन्हु से मालूम किया कि मुश्रिकों ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सबसे सख्त क्या मामला किया? उन्होंने बतायाः ''नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे। इतने में उक़बा बिन अबू मुअीत ने आपकी गर्दन में अपना कपड़ा डाला और ज़ोर से खींचा। अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु उसकी तरफ़ बढ़े और उसका मूंढा पकड़ कर उसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दूर किया और कहाः क्या तुम लोग एक आदमी को केवल इस वजह से क़त्ल करना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है।

एक दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे, अबू जहल और उसके साथी वहीं बैठे थे। उन्होंने एक दूसरे से कहाः कौन है जो फ़लां क़बीले के ऊंटों की ओझड़ियां लाकर मुहम्मद की पीठ पर डालेगा जब कि वह सज्दे में जाएगा? यह सुनकर क़ौम का सबसे बदबख्त खड़ा हुआ और ओझड़ी लाकर ताक में बैठ गया। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सज्दे में गए तो आप की पीठ पर दोनों कांधों के बीच में ओझड़ी डाल दी। यह देख कर सभी हंस पड़े और एक दूसरे पर गिरने लगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे ही की हालत में थे। आप ने अपना सर नहीं उठाया, यहां तक कि आपकी बेटी फ़ातिमा

रजियल्लाहु अन्हाआयीं और उन्होंने आपकी पीठ से गन्दगी को हटाया।

इससे भी ज़्यादा कठोर वह मानसिक यातना थी जो अलग–अलग शक्लों में आपको दी गयी जैसे कभी आपकी दावत को ठुकराया गया और आपको झुठलाया गया, कभी आपको काहिन, कवि, मजनूं और जादूगर कहा और कभी आपकी पेश की गयी आयतों को पिछली क़ौमों के देव मालाई क़िस्से कहानियां क़रार दिया गया। इन्हीं में से अबू जहल का यह कथन भी था जो उसने उपहास के तौर पर कहा थाः ''ऐ मेरे अल्लाह! यदि यह तेरे पास से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश उतार या हमें दुख दायी यातना का शिकार कर दे।

आपका चचा अबू लहब आपके पीछे पीछे लगा रहता। और आप लोगों की इज्तिमागाहों या बाज़ारों में दावत के उद्देश्य से तशरीफ़ ले जाते तो वह आपको झुठलाया करता और लोगों को आपकी बात मानने से मना करता और उसकी पत्नी उम्मे जमील लकड़ियों और कांटों को जमा करती और उन्हें आपके रास्ते में फैला दिया करती। जब आपको शेअबे अबू तालिब में घेर दिया गया था तो उस समय की मुसीबत अपनी चरम सीमा को पहुंच गयी, मुसलमानों ने भूख की सख्ती से पेड़ के पत्ते तक खाए और आपके दुख में और इज़ाफ़ा उस समय हुआ जबकि आपने उस चचा को खो दिया जो आपकी हिफ़ाजत किया करते थे और आपकी ओर से बचाव किया करते थे और दुख व पीड़ा दोगुना उस समय हो गये जब वे कुफ़्र की हालत पर मरे।

फिर अचानक आपकी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाकी वफ़ात हो गयी जो कि आपको तसल्ली दिया करती थीं और आपकी हर प्रकार से मदद किया करती थीं। इसके बाद आप अपने क़त्ल की कई कोशिशों के बाद अपने वतन को छोड़ कर हिजरत के लिए निकल पड़े। मदीना में सब्र व धैर्य, बलिदान और कुरबानी का सख्त से सख्त ज़िन्दगी का नया दौर शुरु हुआ यहां तक कि आप भूखे रहे और गुरबत का जीवन गुजारा और अपने पेट पर पत्थर तक बांधा। आप बयान करते हैं कि ''मुझे अल्लाह की राह में इस शिद्दत से डराया गया कि इस जैसा किसी को नहीं डराया जा सकता। मुझे अल्लाह की राह में इतनी अधिकता से यातनाएं दी गयीं कि इतनी सख्त यातनाएं किसी को नहीं दी जा सकतीं। मुझ पर तीस दिन और रात ऐसे आए कि मेरे और बिलाल के पास कोई ऐसी चीज़ न थी जिसे ज़िन्दा इन्सान खाता है सिवाए उस थोड़े से सामान के जो बिलाल रजियल्लाहु अन्हु अपनी बग़ल में छुपाये रहते।

आपकी इज़्ज़त पर हमला किया गया। आपको कपटियों और जाहिल बद्दुओं से यातनाएं सहना पड़ीं। सही बुखारी में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि एक बार रसूले अकरम ने ग़नीमत का माल तक़सीम किया। एक अन्सारी ने कहाः ''मुहम्मद ने इस तक़सीम से अल्लाह की खुशनूदी नहीं चाही है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहुंचा और आपको इस घटना की खबर दी तो आपका चेहरा तब्दील हो गया और आपने

इस अवसर पर फ़रमायाः अल्लाह मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाए उन्हें इससे भी अधिक यातनाएं दी गयीं तो उन्हों ने सब्र किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन अवसरों पर सब्र व धैर्य का मुज़ाहिरा किया, उनमें आपके बच्चों और बेटियों की वफ़ात के दिन भी हैं, आपके सात बच्चे थे। एक के बाद एक उनकी मौतें हुईं यहां तक कि फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाके अलावा कोई बाक़ी नहीं बचा। इससे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न तो कमज़ोर पड़े और न ही नर्म हुए बल्कि अत्यन्त ही बेहतर अन्दाज़ में सब्र का दामन पकड़े रहे। आपके बेटे इबराहीम रजि0 की जब वफ़ात हुई उस दिन आपकी ज़बान से ये कलिमात अदा हुएः ''आँखें भीगी हैं दिल दुखी है लेकिन इस अवसर पर हम वही कहेंगे जिसे हमारा पालनहार पसन्द करेगा, ऐ इबराहीम! हम तेरी जुदाई से दुखी हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब्र केवल यातनाओं और तकलीफ़ों तक ही सीमित नहीं था बल्कि आप अल्लाह के आज्ञा पालन की राह में भी सब्र का सबूत दिया करते थे क्यों कि अल्लाह ने इसका हुक्म दिया था। अतएव आप इबादत व फ़रमां बरदारी में बड़ी हद तक मेहनत किया करते थे यहां तक कि आपके पांव में लम्बे क़याम की वजह से सूजन आ जाती थी। इस बारे में जब आप से मालूम किया गया तो आपने फ़रमायाः ''क्या मैं शुक्र अदा करने वाला बन्दा न हो जाऊं।

वास्तविक अर्थों में ज़ाहिद उसे कहा जा सकता है जिसके पास असबाब मौजूद हों लेकिन उसने इससे अपने को बचाकर रखा और इससे बे रग़बत होकर इसे छोड़ दिया। हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया के सबसे बड़े ज़ाहिद इन्सान थे और दुनिया में बहुत ही कम रग़बत रखते और ज़रूरत की मात्रा पर भरोसा किया करते थे। और तंग दस्ती के जीवन को वरीयता देते, यद्यपि दुनिया आपके सामने थी और आप अल्लाह की निगाह में सबसे सम्मानित इन्सान थे। यदि आप चाहते तो अल्लाह तआला आपकी इच्छानुसार माल व नेमत प्रदान करता।

इमाम इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में खैसमा के हवाले से ज़िक्र किया है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गयाः ''यदि आप चाहें तो हम आपको इस ज़मीन के ख़जाने और कुन्जियां प्रदान कर दें जिसे हमने आप से पहले किसी नबी को प्रदान नहीं किया और आपके बाद किसी को नहीं देंगे और इसकी वजह से अल्लाह के निकट आपके मक़ाम व दर्जा में कोई कमी नहीं होगी। आपने फ़रमायाः ''इन सभी चीज़ों को मेरी आखिरत की ज़िन्दगी के लिए जमा करके रखो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सांसारिक जीवन बड़ा ही आष्चर्य जनक है। अबू ज़र रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं नबी अकरम के साथ मदीना के पहाड़ी इलाक़े में चल रहा था कि हमने उहुद पहाड़ को सामने पाया आपने इर्शाद फ़रमायाः मुझे इस बात से खुशी नहीं होगी कि मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो और

मेरे पास इनमें से एक दीनार के रहते हुए तीन दिन गुज़र जाएं, सिवाए उसके जिसे मैंने दीनी मक़्सद के तहत जमा कर रखा हो, या यह कि मैं अल्लाह के बन्दों के ऊपर दाएं बाएं और पीछे से खर्च कर दूं।

आप कहा करते थेः ''मुझे इस दुनिया से क्या मतलब, मैं इस दुनिया में उस सवार की तरह से हूं जिसने किसी पेड़ के नीचे साया हासिल किया और फिर उसे छोड़ कर आगे चल पड़ा।

आपका खाना और लिबास

जहां तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खाने की बात है तो एक महीना, दो महीने और तीन महीने गुज़र जाते थे और आपके घर में आग रौशन नहीं होती थी और आप का खाना खजूर और पानी हुआ करता था किसी दिन आप भूख की शिद्दत से निढाल हो जाया करते थे लेकिन आपको पेट भरने के लिए कुछ नहीं मिलता था आप की ज़्यादा तर रोटियां जौ की हुआ करती थीं और आपके बारे में मन्कूल है कि आपने बारीक आटे की रोटी कभी नहीं खायी बल्कि आपके सेवक अनस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि दोपहर या रात के खाने में कभी गोश्त और रोटी एक साथ नहीं होते या यह कि मेहमान आए हों

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिबास दूसरी चीज़ों की तरह मामूली ही होते थे। सहाबा किराम ने लिबास में आपके ज़ुहुद और तकल्लुफ न होने की गवाही दी है जबकि आप क़ीमती से क़ीमती कपड़ा बनवा सकते थे। एक सहाबी आप की पोशाक की खूबी बयान करते हुए

कहते हैं ''मैं रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास किसी मसले की बाबत बातचीत करने के लिए आया तो देखा कि आप बैठे हुए थे और आपके जिस्म पर मोटे सूती कपड़े का इज़ार पड़ा हुआ था।

अबू बुरदह रजियल्लाहु अन्हु आइशा रजियल्लाहु अन्हाकी सेवा में हाज़िर हुए तो उन्होंने एक पेवन्द लगा हुआ कपड़ा और मोटा इज़ार निकाला और कहाः ''रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हीं दो कपड़ों में वफ़ात पायी। अनस रजिव बयान करते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चल रहा था और आपके जिस्म पर एक मोटी धारी वाली नजरानी चादर पड़ी हुई थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मौत के समय दिरहम, दीनार, गुलाम या लौंडी या कोई दूसरी चीज़ नहीं छोड़ी सिवाए सफ़ेद खच्चर, हथियार और ज़मीन के जिसे सदक़ा कर दिया था। आइशा रजियल्लाहु अन्हाबयान करती हैं ''जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिक़ाल हुआ उस समय मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे जिन्दा इन्सान खाता है सिवाए थोड़े से जौ के। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जब वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह एक यहूदी के यहां कुछ जौ के बदले गिरवी रखी हुई थी।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का न्याय

जहां तक न्याय करने की बात है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने पालनहार के साथ, अपने नफ़्स के साथ, अपनी पाक पत्नियों के साथ दूसरों के साथ चाहे

वह कितने ही क़रीबी हों या अजनबी, साथी हों या दोस्त और हमराज़ हों या विरोधी सभी के साथ अपनी ओर से न्याय को ध्यान में रखते थे यहां तक कि जानी दुश्मन के साथ भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न्याय किया करते थे जिस पर कुछ लोग एतिराज़ किया करते थे और कुछ लोग आप की शान में ग़लतियां कर दिया करते थे मगर आप न्याय को हाथ से नहीं जाने देते थे। सफ़र में हो या क़याम में हर हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न्याय व समानता को पसन्द किया करते थे और उन्हीं की तरह मुष्किलों व मुसीबतों को सहन करते थे। आप सहाबा किराम से मुमताज़ रहना पसन्द नहीं किया करते थे।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि बदर के दिन हम लोग एक ऊंट पर तीन सवार थे। अबू लबाबा और अली रजियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैदल चलने की बारी आयी तो उन दोनों ने कहाः ''आप सवार रहें हम पैदल चलते हैं। आपने फ़रमायाः ''तुम दोनों मुझ से ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और न ही मैं तुम दोनों से ज़्यादा अज्र व सवाब से महरूम रहने वाला हुं।

उसैद बिन हुज़ेर रजियल्लाहु अन्हु अपने साथियों से मज़ाक़ कर रहे थे और उन्हें हंसा रहे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी कमर में लकड़ी चुभोई उसैद ने कहाः ''आपने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई, मैं आप से इसका

बदला लूंगा। आपने कहाः ''बदला ले लो। उसैद ने कहाः ''आपके जिस्म पर क़मीस है जबकि मेरे जिस्म पर क़मीस नहीं थी। तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़मीस को हटा दिया। उस समय उसैद रजियल्लाहु अन्हु आप से चिमट गए और आपकी कमर और पसली की हडडी के बीच के हिस्से का बोसा लेने लगे। उसैद ने कहाः ''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मक़सद यही था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की सीमाओं को नहीं छोड़ा करते थे जिन्हें अल्लाह ने लोगों के बीच न्याय करने के लिए स्थापित किया है। चाहे ज़ुल्म करने वाला आपका क़रीबी और चहीता ही क्यों न होता, अतएव मख़ज़ूमी महिला की चोरी की घटना में है कि आपने इस बारे में उसामा रजियल्लाहु अन्हु की सिफ़ारिश को स्वीकार नहीं किया और वह मशहूर बात कहीं ''ऐ लोगो! तुम से पहले लोग केवल और केवल इस वजह से हलाक हो गए कि उनमें जब कोई शरीफ़ इन्सान चोरी करता तो उसे छोड़ दिया करते थे और जब कोई कमज़ोर इन्सान चोरी करता तो उसको सज़ा दे देते थे। अल्लाह की क़सम! यदि फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट डालता।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में ग़ैर मुस्लिमों के कथन

नीचे की पंक्तियों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ दार्शनिकों और पश्चिमी स्कालरों के कुछ कथन बयान किए जा रहे हैं जिनसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महानता, आपकी नुबुवत, उमदा खूबियां और आपकी लाई हुई शरीअत की हक़ीकत के ऐतिराफ़ का पता चलता है। इसमें उन खुराफ़ात का कोई अंश भी नहीं जिन्हें इस्लाम दुश्मनों ने फैला रखा है।

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक बरनाडशा अपनी प्रख्यात किताब ''मुहम्मद जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने जला डाला था, में कहता हैः ''आज दुनिया को मुहम्मद की फिक्र विचारों के हामिल इन्सान की ज़रूरत है जिन्होंने अपने दीन को हमेशा दूसरों की निगाह में सम्मान योग्य बना के रखा। यह दीन तमाम सभ्यताओं को हज़म करने की सबसे अधिक कुदरत रखता है। यह सदैव बाक़ी रहने वाला दीन है। मैंने अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को देखा कि वे दलीलों के आधार पर इस दीन में दाखिल हुए और शीघ्र ही यह दीन यूरोप में बड़े पैमाने पर जगह पाएगा।

उसने आगे लिखाः ''मध्य युग में विभिन्न दीनी हस्तियों ने जिहालत और तास्सुब के कारण दीने मुहम्मदी की ग़लत तस्वीर पेश की। वे इस दीन को मसीहियत का विरोधी माना करते थे लेकिन मैंने इस व्यक्ति के बारे में जानकारी हासिल की तो बड़ी विचित्र चीज़ें मालूम हुईं। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि यह व्यक्ति मसीहियत विरोधी नहीं

था बल्कि सच्ची बात यह है कि इसे मानवता का मुहाफ़िज़ कहा जाए। मेरा ख्याल है कि यदि आज उसे दुनिया की हुकूमत हासिल हो जाए तो वह हमारी मुश्किलात को ऐसे उसूलों के ज़रिए हल करने में कामयाब हो जाएगा जो सौभाग्य व सलामती की ज़मानत हैं।

प्रसिद्व नोबेल इनाम विजेता अंग्रेज फ़लसफ़ी थामस कार लायल अपनी किताब अल इबताल में लिखता हैः ''इस ज़माने में किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी शर्म की बात यह हो गयी है कि उन लोगों की बातों पर कान धरे जो कहते हैं कि दीन इस्लाम झूठा है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम झूठे हैं और धोखे बाज़ हैं।

इस प्रकार की जो घटिया और रुसवा कुन बातें फैलाई जाती हैं ज़रूरी है कि हम उनके खिलाफ़ जंग छेड़ें, क्योंकि उस नबी ने जो संदेश पहुंचाया है वह बारह सदियों तक लग भग बीस करोड़ लोगों के लिए रौशन चिराग़ बना रहा । क्या कोई यह समझ सकता है कि ये करोड़ों लोग जिन्होंने इस पैग़ाम के तहत ज़िन्दगी गुज़ारी और इसी पर वफ़ात पा गए वे सभी झूठ के शिकार और फ़रेब खाए हुए थे?

हिन्दू फलसफ़ी राम कृष्ण राय कहता हैः ''जिस समय मुहम्मद प्रकट हुए, अरब का टापू उल्लेखनीय नहीं था। इसी क्षेत्र से मुहम्मद ने अपनी महान आत्मा की बुनियाद पर एक नयी दुनिया, आधुनिक जीवन, सभ्यता एवं संस्कृति और नयी हुकूमत स्थापित की जो मराकश से हिन्द व

पाक तक फैली हुई थी। उसने तीन महाद्वीपों के विचार व जीवन पर प्रभाव डाला अर्थात ऐशिया, अफ्रीक़ा और यूरोप पर

मुश्तष्रिक कैन्डी ज़्वेमर कहता हैः ''मुहम्मद निःसन्देह महानतम धार्मिक कायदीन में थे। उन पर यह बात सादिक़ आती है कि वे शक्ति शाली, सुधारक, भाषाविद विजय हासिल करने वाले साहसी और महान विचारक थे। यह बात सही नहीं है कि हम उनकी ज़ात की ओर ऐसी चीज़ों को जोड़ दें जो उनकी खूबियों के विरोधी हों। वे जो कुछ लेकर आए, उनमें हमने उसी चीज़ को पढ़ा है और उसकी सीरत भी उसी चीज़ की गवाही देती है।

अंग्रेज़ सर विलियम कहता हैः ''मुसलमानों के नबी मुहम्मद अपने अखलाक़ की बेहतरी और व्यवहार की अच्छाई की वजह से बचपन ही से तमाम शहर वालों के निकट सहमति से अमीन के लक़ब से पुकारे गए। बात चाहे जो भी हो मुहम्मद इस बात से उच्च हैं कि खूबियां बताने वाले उनको पहचान सकें और उनके बारे में न जानने वाला व्यक्ति उनके मूल्य व सम्मान को नहीं पहचान सकता है। उनके बारे में जानकार वह है जिसने उनकी रौशन तारीख पर सोच विचार किया हो जिस तारीख को मुहम्मद ने रसूलों और विचारकों के पेशवा के तौर पर छोड़ा है।

वह आगे कहता हैः ''मुहम्मद अपने वाजह कलाम और आसान दीन की वजह से मुमताज़ हैं। उन्होंने ऐसे कारनामे अंजाम दिए हैं कि अक़्लें हैरान हैं और तारीख ने ऐसे किसी सुधारक को नहीं देखा है जिसने लोगों को जगा दिया हो और अखलाक़ को ज़िन्दा कर दिया हो और

कम ही समय में भले कामों की महानता को स्पष्ट कर दिया हो जैसा कि इस्लाम के नबी मुहम्मद ने किया है।

प्रसिद्ध रूसी फलसफ़ी और नाविल निगार टालस्टाय कहता हैः ''मुहम्मद के गर्व के लिए इतनी ही बात काफ़ी है कि उसने ज़लील झगड़ालू क़ौम को बुरी आदतों के शैतानी चंगुल से नजात दिलायी और उनके सामने तरक़्क़ी और आगे बढ़ने की राह खोल दी। एक दिन मुहम्मद का दीन अक़्ल व हिक्मत के अनुसार होने की वजह से दुनिया पर छा जाएगा।

आस्टीरिया का नागरकि शबरक कहता हैः ''इन्सानियत को मुहम्मद जैसे इन्सान की ओर निसबत पर गर्व है क्यों कि वह अनपढ़ होने के बावजूद लगभग दस सदी पहले एक शरीअत लाए। हम यूरोप वाले उस दिन को बड़ा ही भाग्यवान महसूस करेंगे जबकि उसकी बुलन्द चोटी पर पहुंच जाएंगे।